AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पर्यावरणीय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Authors

प्रो. कल्पना कुशवाह
विभागाध्यक्ष शिक्षा विभाग
इंस्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

प्रियंका तिवारी
शोधार्थी, शिक्षाशास्त्र
जीवाजी विश्वविद्यालय
ग्वालियर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध सार

प्रस्तुत शोध पत्र ''ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पर्यावरणीय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन'' पर आधारित है। शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं– ग्रामीण माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पर्यावरणीय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना। शहरी माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पर्यावरणीय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना। अनुसंधान में प्रयुक्त समस्या की स्पष्ट व्याख्या हेतु शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। न्यादर्श :शोधार्थी द्वारा मध्यप्रदेश के दतिया जिले के 2 ग्रामीण एवं 2 शहरी माध्यमिक विद्यालय के 20 शहरी एवं 20 ग्रामीण छात्र–छात्राओं का चयन किया है। प्रस्तुत शोध में उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुये शोधार्थी द्वारा छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के लिए उनके पिछले वर्ष का परीक्षा परिणाम लिया गया तथा पर्यावरण के लिए प्रमाणीकृत उपकरण के रूप में प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित पर्यावरण जागरूकता अभिक्षमता मापनी का प्रयोग किया गया। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि ग्रामीण माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पर्यावरणीय वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है। शहरी माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पर्यावरणीय वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

मुख्य शब्द

ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्रा, शैक्षिक उपलब्धि, पर्यावरणीय वातावरण.

प्रस्तावना

शिक्षा मानव को विकसित करने का मूल अधिकार है। शिक्षा के द्वारा मानव की जन्मजात शक्ति का विकास तथा व्यवहार में परिवर्तन कर उसे परिमार्जित किया जाता है एवं उसे सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जा सकता है। वास्तव में मानव के विकास के इतिहास में शिक्षा एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। 'शिक्षा' शब्द संस्कृत भाषा की 'शिक्ष' धातु से बना है जिसका अर्थ है ''सीखना एवं सिखाना''। इस प्रकार शिक्षा का शाब्दिक अर्थ है, सीखना (शिक्षा ग्रहण करना) तथा सिखाना (शिक्षा प्रदान करना) से है।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, ''मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।''

देश में अनेक धार्मिक संस्थाएँ भी माध्यमिक विद्यालयों का संचालन कर रही है, जैसे– आर्य समाज, कायस्थ समुदाय, ब्राह्मण समुदाय आदि। अल्पसंख्यक समुदाय के लोग पृथक माध्यमिक विद्यालयों का संचालन कर रहे है। अधिकांश विद्यालय सफलतापूर्वक कार्य कर रहे है परन्तु कुछ गम्भीर दोष भी पाए जाते है, जैसे निष्पक्ष भाव से शिक्षकों व कर्मचारियों की नियुक्ति न करना, शिक्षा प्रदान करने के अन्तिम उद्देश्य के रूप में अपने धर्म का प्रचार करना, धर्म निरपेक्षता के विरूद्ध आचरण, आदि।

शैक्षिक उपलब्धि

सुपर (1967) के अनुसार,''शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य है कि विद्यार्थी ने शिक्षण के उपरांत क्या और कितना सीखा, तथा वह कोई कार्य कितनी भली–भाँति कर लेता है।''

शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय छात्रों द्वारा अर्जित ज्ञान, बोध, कौशल, अनुप्रयोग आदि योग्यताओं की मात्रात्मक अभिव्यक्ति से है। फ्रीमैन के शब्दों में, ''शैक्षिक उपलब्धि किसी विशेष या विषयों के समूह में ज्ञान या कौशल का मापन करती है।'' इस प्रकार हम कह सकते हैं कि शिक्षा के उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए छात्र द्वारा औपचारिक शिक्षा के माध्यम से अर्जित ज्ञान या कौशल ही शैक्षिक उपलब्धि है अर्थात् शैक्षिक उपलब्धि किसी निश्चित समयावधि में एक या अनेक विषयों में छात्रों के ज्ञान, समझ एवं कुशलता का मापन करता है।

विद्यार्थियों के शिक्षण हेतु लिखित एवं मौखिक पद्धतियों का प्रचलन आदिकाल से प्रभावी रहा हैं एवं समय शिक्षण की पद्धतियाँ काफी कठिन थी। आज वर्तमान समय में आधुनिक एवं तकनीकी युग में शैक्षणिक पद्धतियों में कई गुना अधिक परिवर्तन आया है। जो विद्यार्थी समय परिवर्तन के साथ परिवर्तित शैक्षणिक विधियों के साथ नहीं चल पाते हैं उनका शैक्षणिक स्तर कम या बहुत कम रहता है। विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि ज्ञात करने के लिए निदानात्मक परीक्षण किया जाता है।

पर्यावरण

बोरिंग के अनुसारः ''एक व्यक्ति के पर्यावरण में वह सब कुछ सम्मलित किया जाता है जो उसके जन्म से मृत्यु पर्यन्त तक प्रभावित करता है।''

अनास्टसी के अनुसारः ''व्यक्ति के वंशानुक्रम के अतिरिक्त वह सब कुछ पर्यावरण माना जाता है जो उसे प्रभावित करता है।''

पर्यावरण का तात्पर्य उस परिवेश से होता है जो जीव मण्डल को चारों तरफ से घेरे हुए है। इसके अन्तर्गत वायुमण्डल, स्थलमण्डल तथा जलमण्डल के भौतिक, रासायनिक एवं सभी तत्वों को सम्मिलित किया जाता है। प्रकृति के दो तत्व वंशानुक्रम तथा पर्यावरण जीवों एवं उनकी क्रियाओं को सबसे अधिक प्रभावित करते हैं इसलिए पर्यावरण को समझने के लिए वायुमण्डल, स्थलमण्डल, जलमण्डल एवं जीवमण्डल को समझना आवश्यक हो जाता है। किसी जीव या उसके अजैविक एवं जैविक परिवेश के बीच अन्तर्क्रिया केवल परिवेश या सूक्ष्म पर्यावरण को ही नहीं वरन् जीवों के क्रियाकलापों को भी प्रस्तुत करती है।

पर्यावरण में दो तत्व समाहित होते हैं – जैविक और अजैविक। जैविक तत्वों में पेड़–पौधे, पशु–पक्षी, जीव–जन्तु और मानव आते हैं, जबकि अजैविक तत्वों में वायु, जल, भूमि, मिट्टी, वन आदि तत्व आते हैं। जैविक तथा अजैविक तत्व दोनों साथ–साथ क्रियाशील रहते हैं। ये आपस में निर्भर रहकर जीवन का संचार करते हैं। पर्यावरण के अन्तर्गत सभी प्राणी मानव के साथ एक ही भौगोलिक परिवेश में बराबर का हिस्सा बँटाते हैं, परन्तु इसमें मानव अपनी सर्वोपरि व महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्र–छात्राओं की पर्यावरण के प्रति रुचि तो है परन्तु कम जागरूकता की वजह से छात्र–छात्राएं पर्यावरण के प्रति वह कार्य नहीं कर पाते हैं जो उन्हें करना चाहिए। प्रकृति से प्रेम करने

वाले मनुष्य मात्र पर्यावरण सहेजने की बात करते रहते हैं और अपने बच्चों को भी ठीक प्रकार से प्रकृति प्रदत्त वस्तुओं का महत्व नहीं बता पाते हैं।

ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि तो उनके अध्ययन में एकाग्रता और पाठ को रुचिकर बनाने से प्रभावित होती है, परन्तु यदि विद्यार्थियों को अपने चारों ओर अच्छा पर्यावरणीय वातावरण मिले तो उनमें एक नई ऊर्जा का संचार होता है और उनमें एकाग्रता एवं चेतना आती है जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है।

शोध उद्देश्य

1. ग्रामीण माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पर्यावरणीय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. शहरी माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पर्यावरणीय वातावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

परिकल्पना

$\mathbf{H_{01}}$ ग्रामीण माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पर्यावरणीय वातावरण का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

$\mathbf{H_{02}}$ शहरी माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पर्यावरणीय वातावरण का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

शोध विधि

अनुसंधान में प्रयुक्त समस्या की स्पष्ट व्याख्या हेतु शोधकर्ता ने सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है।

न्यादर्श

शोधार्थी द्वारा मध्यप्रदेश के दतिया जिले के 2 ग्रामीण एवं 2 शहरी माध्यमिक विद्यालय के 20 शहरी एवं 20 ग्रामीण छात्र–छात्राओं का चयन किया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुये शोधार्थी द्वारा छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के लिए उनके पिछले वर्ष का परीक्षा परिणाम लिया गया तथा पर्यावरण के लिए प्रमाणीकृत उपकरण के रूप में प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित पर्यावरण जागरूकता अभिक्षमता मापनी का प्रयोग किया गया।

समस्या का परिसीमन

प्रस्तुत शोध दतिया मध्यप्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

शोधार्थी द्वारा शोध में प्रयुक्त समस्या कथन की आवश्यकता अनुसार निम्नलिखित सूत्रों का प्रयोग किया गया है:

- प्रसरण विश्लेषण (ANOVA)
- मध्यमान
- एफ–मान

विश्लेषण

परिकल्पना : H_{01}

ग्रामीण माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पर्यावरणीय वातावरण का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका 1: ग्रामीण माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पर्यावरणीय वातावरण का प्रभाव

स्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्राश	मध्यमान वर्ग (प्रसरण)	एफ–अनुपात	परिणाम
समूहों के मध्य	5929.225	01	5929.225	135.196	सार्थक
समूहों के अन्तर्गत	1666.550	38	0043.857		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

उपरोक्त परिकल्पना 1 सत्यापित करने एवं तालिका क्र. 1 के अनुसार समूहों के मध्य 2 स्वतंत्राश तथा समूहों के अन्तर्गत 39 पर एफ–अनुपात का मान 0.05 स्तर पर 3.24 होता है। गणना किया हुआ एफ–अनुपात का मान 135.196 प्राप्त हुआ है जो कि विश्वास स्तर के मान से अधिक है अतः सार्थक है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

अर्थात् ग्रामीण माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पर्यावरणीय वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

परिकल्पना : H_{02}

शहरी माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पर्यावरणीय वातावरण का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

तालिका 2: शहरी माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पर्यावरणीय वातावरण का प्रभाव

स्रोत	वर्गों का योग	स्वतंत्राश	मध्यमान वर्ग (प्रसरण)	एफ–अनुपात	परिणाम
समूहों के मध्य	7290.000	1	7290.000	155.664	सार्थक
समूहों के अन्तर्गत	1779.600	38	46.832		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

उपरोक्त परिकल्पना 2 सत्यापित करने एवं तालिका क्र. 2 के अनुसार समूहों के मध्य 2 स्वतंत्राश तथा समूहों के अन्तर्गत 39 पर एफ–अनुपात का मान 0.05 स्तर पर 3.24 होता है। गणना किया हुआ एफ–अनुपात का मान 155.664 प्राप्त हुआ है जो कि विश्वास स्तर के मान से अधिक है, अतः सार्थक है। इस आधार पर शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

अर्थात् शहरी माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पर्यावरणीय वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष

तथ्यों के विश्लेषण ज्ञात होता है कि ग्रामीण एवं शहरी माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर उनके पर्यावरणीय वातावरण का सार्थक प्रभाव पड़ता है। विद्यार्थी चाहे ग्रामीण परिवेश के हों या शहरी परिवेश के आसपास का वातावरण तो उन्हें प्रभावित करता ही है। यदि विद्यार्थी स्वच्छ पर्यावरणीय वातावरण में अध्ययन करते हैं और प्रातः जल्दी उठते हैं तो चारों तरफ का शुद्ध एवं स्वच्छ वातावरण उन्हें स्फूर्ति प्रदान करता है और

अध्ययन में एकाग्रता आती है जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है अर्थात् उत्तम होती है। विद्यालय में भी पर्यावरणी जागरूकता संबंधी वातावरण के लिए छात्र–छात्राओं से वृक्षारोपण इत्यादि कराये जाते हैं ताकि प्रकृति के समीप रहते हुए विद्यार्थी प्राकृतिक चीजों को आत्मसात कर सकें। निःसन्देह यदि स्वच्छ साफ वातावरण विद्यार्थियों को प्राप्त होगा तो उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव अवश्य पड़ता है।

सुझाव

1. शिक्षकों को विद्यार्थियों को पर्यावरण के प्रति जागरूक रहने के लिए प्रयास करने चाहिए।
2. विद्यालय में समय–समय पर वृक्षारोपण कार्यक्रम एवं अन्य कार्यक्रम होने चाहिए ताकि विद्यार्थी जागरूक रहकर रचनात्मकता के साथ कार्य कर सकें।
3. शिक्षक को विद्यालय में एवं अभिभावकों को घर में ऐसा वातावरण निर्मित करना चाहिए ताकि बच्चे एकाग्रता से अध्ययन कर सकें।
4. शिक्षकों को ग्रामीण या शहरी दोनों ही क्षेत्रों में समान रूप से अध्ययन कराना चाहिए।
5. विद्यार्थियों पर्यावरण सहेजने के लिए हर संभव प्रयत्न करना चाहिए ताकि उनके व्यक्तित्व का विकास हो सके।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, पी.के. (1993), *''पर्यावरण एवं नदी प्रदूषण''* आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
2. चन्डोला, पी. (1991), *''प्रदूषण पृथ्वी का गृहण''* हिमालय पुस्तक भण्डार, नई दिल्ली।
3. चौधरी, रेनू (2007), *''पर्यावरण अध्ययन एवं शिक्षण''* ज्ञान भारती प्रकाशन न्यू कॉलोनी, जयपुर।
4. चन्द्रा, संस (1985), *''पर्यावरण एवं मानव स्वास्थ्य''* आर्य पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
5. भटनागर, सुरेश (1991). *''शिक्षा मनोविज्ञान'',* अटलान्टिक पब्लिशर्स, दिल्ली।
6. चौहान, ए. एस. (2006). *''एडवांस एजूकेशनल साइक्लोजी'',* विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

––==00==––